RNI NO. DELHIN/2017/74159

साहित्य, कला-संस्कृति का त्रैमासिक संचयन

सृजन सरोकार

वर्ष 1 अंक 4 जुलाई – सितम्बर 2018

साहित्य, कला-संस्कृति का त्रैमासिक संचयन

सृजन सरोकार

वर्ष 1 | अंक 4 | जुलाई – सितम्बर 2018

संपादक
गोपाल रंजन

कार्यालय
G.H.-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स,
लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063

RNI NO. DELHIN/2017/74159

सम्पादक मंडल

प्रो० दीनबन्धु पाण्डेय
sanskritishodh@gmail.com

प्रो० कृष्णचन्द्र लाल
kelal55@gmail.com

प्रो० अजय जैतली
ajayjaitly@gmail.com

डॉ० सुभाष राय
raisubhash953@gmail.com

अरविन्द कुमार सिंह
arvindksinghrstv@gmail.com

डॉ० भरत प्रसाद
deshdhar@gmail.com

महेश अश्क
mahesh.ashk49@gmail.com

मुद्रक-प्रकाशक : **उमा शर्मा रंजन**
सहायक संपादक : **अंशुल रंजन**
संपादन सहयोग : **उमेश सिंह**

आवरण : **कुंवर रवीन्द्र**
रेखांकन : **डॉ० जूही शुक्ला, डॉ० अन्नपूर्णा शुक्ला**
कला निदेशक : **नीतीश कुमार**

विशेष प्रतिनिधि
गंभीर सिंह पालनी
मो. : +91-7982295266
गोरखपुर : **भरत शर्मा**
मो. : +91-8004935731
इलाहाबाद : **डॉ० जूही शुक्ल**
मो. : +91-9411082387
मुम्बई : **कुमार विजय**
मो. : +91-9004748130
राजस्थान : **डॉ० अन्नपूर्णा शुक्ला**
मो. : +91-7014568464
झारखंड : **सत्या शर्मा ' कीर्ति '**

साहित्य, कला-संस्कृति का त्रैमासिक संचयन

सृजन सरोकार

वर्ष 1 | अंक 4 | जुलाई – सितम्बर 2018

GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063
फोन : +91-11-40079949
मो.नं. : +91-98109 07449, +91-95554 12177,
+91-94156 46898
ईमेल : srijansarokar@gmail.com,
granjan234@gmail.com

मूल्य : 50 रुपए

व्यक्तियों के लिए : 200 **रुपए (वार्षिक)**
संस्थाओं के लिए : 500 **रुपए (वार्षिक)**
सृजन सरोकार रजिस्टर्ड डाक से मँगाने हेतु एक वर्ष का डाक खर्च 100 रुपए अतिरिक्त

शुल्क सृजन सरोकार के नाम से निम्नलिखित खाते में भेजें
Bank Name : The Nainital Bank Ltd., New Delhi
A/C No. : 0492000000012646
IFSC : NTBL0DEL049

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक उमा शर्मा रंजन द्वारा
एस.आई. प्रिंटर्स, 1534, कासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान,
दिल्ली-110006 से मुद्रित एवं
GH-1/32 अर्चना अपार्टमेंट्स, लाल मार्केट के सामने, पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-110063 से प्रकाशित
सम्पादक : * गोपाल रंजन

संचालन संपादन अवैतनिक

सभी विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन।
प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
*** सामग्री चयन के लिए पीआरबी एक्ट-1867 के तहत जिम्मेदार**

अनुक्रम

अपनी बात

आज भी जीवित हैं, पुराने सवाल _____ 4

संस्मरण

अमृतलाल नागर पर एक भाव-भीना संस्मरण : अमरित बतिया बिसरत नाहि-डॉ. दीप्ति गुप्ता __ 6

संस्कृति

किन्नर-एस. आर. हरनोट _____ 13

हिमालय प्रदेश का भुण्डा महायज्ञ-आशा शैली ____ 43

लेख

समकालीन कविता का देशान्तर-भरत प्रसाद _____ 20

कहानी

ताजपोशी-डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी _____ 25

असामान्यता-डॉ. अमिता प्रकाश _____ 35

दूसरा अध्याय-डॉ. कविता विकास _____ 38

जीन-काठी-एस. आर. हरनोट _____ 50

बहुवंश-गोविन्द उपाध्याय _____ 93

लघु कथा

बेटी का दर्द-कृष्ण चन्द्र महादेविया _____ 37

रोटी की कीमत-राधेश्याम भारतीय _____ 68

आलोचना

इलाचन्द्र जोशी का साहित्य और मनोविज्ञान-डॉ. यासमीन सुलताना नक़वी _____ 63

कविता

स्वप्निल श्रीवास्तव-अगर मजदूर न होते / प्रमाणपत्र / एक सूना घर / तार बाबू / प्राचीन लिपियां ____ 69

पंखुरी सिन्हा-मौसम मेरी बालकनी में / खेती का सम्मोहन / एक हाथ से खींची गईं तस्वीरें / बातों का पहुँचना / तस्वीरें खींचने-खिंचवाने वाले _____ 70

जयप्रकाश मानस-बिम्ब कुलबुलाते हैं खिड़कियों के आसपास / तब तो मैं खुश होऊं / बाबूजी से बस्स यही सुना है। / अंत में कुछ भी ज़रूरत कहाँ कभी किसे / ठूँठ पर चिरैयों की छानी होना _____ 72

पुरु मालव-भूखे शेर / खेत / विदा / कच्ची सड़क ___ 74

फूलचन्द गुप्ता-हमने सूरज के लिए / दलदल में डूबे लोग / कमजोर रणनीति _____ 76

केशव शरण-कविता और कवि तथा विज्ञापन / इबादत से हटकर / मौन की आदत और शब्दों का प्रयोग / और कुछ चाहिए तो / यह आंच _____ 78

राजेन्द्र आहुति-झुर्रियाँ / मिट्टी / सड़क _____ 79

प्रणय कुमार सिंह-दुखता रहता है यह जीवन / कितनी इच्छाओं ने सँवारा है मुझे _____ 81

डा.ऋतु त्यागी-तुम्हें शायद पता न हो! _____ 82

डॉ. उषा वर्मा-मैं और दादाजी / मेरा सूरज _____ 83

साजीना राहत-समयराग _____ 84

अन्नपूर्णा शुक्ला-फुर्सत से सोचना / नजरबंद _____ 86

अंजू शर्मा-माँ / इक्कीसवीं सदी _____ 87

धर्मेन्द्र त्रिपाठी-कविता / बाबू जी _____ 87

पंकज कुमार साह-ईश्वर इन दिनों / बस यूं ही _____ 89

कला

मकबूल फ़िदा हुसैन के चित्रों में सूफी रंग और भारतीय एकता-डॉ. जूही शुक्ला _____ 90

समीक्षा

सलीब पर सच का आख्यान-सन्तोष कुमार चतुर्वेदी _ 98

शिक्षा-व्यवस्था, तन्त्र और सामाजिक अर्थशास्त्र की कहानियां-डॉ. नेहा भाकुनी _____ 101

दृष्टि का एक नया आयाम : दक्खिन का भी अपना पूरब होता है-अवनीश यादव _____ 103

कुलीन लोक से मुठभेड़ करती कविताएँ-उमाशंकर सिंह परमार _____ 107

आत्मीयता की प्रतिरोधी भूमिका-उमाशंकर सिंह परमार _____ 110

आज भी जीवित हैं, पुराने सवाल

शिमला प्रवास के दौरान मशहूर लेखक एस.आर. हरनोट से भेंट हुई। इस छोटी सी मुलाकात में हरनोट जी ने कई ऐसे प्रश्न उठाए जिनका सामना करने से हम या तो परहेज करते हैं या उन प्रश्नों के औचित्य से ही इनकार कर देते हैं। हरनोट जी के प्रश्न उनके अनुभवों और ज़मीनी हकीकत से उपजे हैं। जन पक्षधरता का दावा करने वाले संगठनों की जवाबदेही पर वे काफी कटु थे। उनकी चिन्ता स्वाभाविक है। वर्तमान राजनैतिकता के दौर को अपनी पीठ पर चाबुक की तरह महसूस करने वाले संवेदनशील लोगों की चिन्ता वाम शक्तियों को हाशिए पर धकेले जाने से और गहरी हुई है। एक ऐसे पक्ष को जो इस देश के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है, आम जन से दूर जाते देखना अत्यंत पीड़ादायक है। आमतौर से लोगों का मानना है कि जनता की समस्याओं के लिए जमीन पर आकर संघर्ष में कोताही के कारण ही यह स्थिति बनी है। वर्तमान राजनैतिकता में जनतंत्र के मूल समीकरण में तीव्र बदलाव हुआ है और काफी हद तक वामपक्ष ने बदलते परिप्रेक्ष्य में अपनी भूमिका को तलाशा है परंतु परिणाम को देखते हुए ऐसा महसूस होता है कि उसकी कोशिश में कहीं बड़ी व्यावहारिक बाधा है। कतिपय विद्वानों का मत है कि जनतंत्र वामपंथ की सैद्धांतिकी के लिए कभी केन्द्रीय प्रश्न नहीं बन पाया है परन्तु भारतीय वाम के बड़े हिस्से ने तेलंगाना विद्रोह के बाद जनतांत्रिक प्रतिरोध का विकल्प चुन लिया था। इस रासायनिक सम्मिलन का काफी दिनों तक प्रभाव भी नजर आया परंतु भारतीय समाज की जड़ में गहरे तक पैठ जमाए जातिवाद वाम सैद्धांतिकी के लिप्यांतरण की राह में बड़ा दुश्मन है; दुर्भाग्य यह है कि इस बड़ी बीमारी को गले लगाने में तमाम वाम शक्तियां पीछे नहीं हैं और अपनी ताकत को क्षीण कर रही हैं।

मोदी सरकार के प्रचंड बहुमत की व्याख्या करते हुए कुछ विद्वानों का यह कहना था कि २०१४ के चुनाव ने इस अपूर्व संभावना को जन्म दिया है कि अब जाति हमारी राजनीति से जाती रहेगी। यह परिघटना यदि सचमुच स्थायी रूप ले लेती तो भविष्य को दृष्टि में रखकर एक व्यूह रचना हो सकती थी। मेरा मानना है कि सही जनतंत्र के लिए जाति का नष्ट हो जाना बेहद जरूरी है। यह सही है कि भारत की सामाजिक व्यवस्था को तोड़कर वर्ग आधारित

संरचना कायम करना लगभग असंभव सा है परन्तु इस रास्ते को छोड़कर सहजीकरण के फेर में पड़ जाने से सबसे अधिक क्षति जनता की होती है। जिस ताकत को इस गरीब देश के लिए आगे की कतार में होना चाहिए था, उसे पीछे की कतार में शामिल होना पड़ रहा है। वाम विरोधी ताकतों की साजिश की गिरफ्त में पूरी दुनिया के साथ हम भी आए हैं। साहित्य को निरर्थक बनाने वाली ताकतें अधिक सक्रिय हैं और साहित्य ही वह साधन है जिसके माध्यम से सही सोच को विकसित किया जा सकता है परन्तु पिछली आधी सदी से इसका क्षरण हो रहा है। इस आग को जलाए रखने की जिम्मेदारी जिनपर है वे कुछ फौरी लाभ के चक्कर में अपने अस्तित्व के लिए संकट पैदा कर रहे हैं और सही मायने में कहा जाए तो यह संकट पैदा भी हो चुका है। आज का समय साहित्य के लिए सबसे बड़ा खलनायक है। इसमें कोई दो राय नहीं कि लिखने में कोई कोताही नहीं बरती जा रही है, तमाम जनपक्षधर लेखकों ने अपने जीवन को इसी अभियान में लगा रखा है परंतु जनपक्षधर राजनैतिक ताकतों का पूर्ण सहयोग और समर्थन नहीं मिल पाने के कारण यह अभियान अपना लक्ष्य हासिल नहीं कर पा रहा है जबकि देश की स्वस्थ राजनीति के लिए साहित्य का रचा जाना एक अनिवार्य शर्त है।

सृजन सरोकार पत्रिका जनपक्षधर लेखन को दृष्टि में रखकर कार्य कर रही है। पिछले तीन अंकों को पाठकों की काफी सराहना मिली है। इस अंक को भी इस तरह प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि पाठक अपने आपको इससे सहज ढंग से जोड़ सके। कहानियों में असामान्यता (अमिता प्रकाश), दूसरा अध्याय (कविता विकास), ताजपोशी (डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी) और बहुवंश (गोविन्द उपाध्याय) में सामाजिक, पारिवारिक और राजनैतिक द्वन्द्व का पक्ष दृष्टिगोचर होता है, वहीं स्वप्निल श्रीवास्तव, जयप्रकाश मानस, पंखुरी सिन्हा, केशव शरण, राजेन्द्र आहुति, पुरु मालव आदि की कविताओं में समय का संघर्ष विश्लेषित होता है। हिमाचल की संस्कृति पर इस अंक में कुछ खास तवज्जो दी गई है। किन्नर (किन्नौर वासी) को केन्द्र में रखकर एस.आर. हरनोट ने एक जरूरी पड़ताल की है तो आशा शैली के लेख मुण्डा महायज्ञ की त्रासदी पर उन्होंने जोरदार ढंग से अपनी पुरानी कहानी 'जीनकाठी' के माध्यम से बात रखी है। भुण्डा महायज्ञ को पूरी तरह व्याख्यायित करने के लिए एस.आर. हरनोट की यह कहानी प्रकाशित करना आवश्यक था।

डॉ. दीप्ति गुप्ता के संस्मरण में कालजयी लेखक अमृतलाल नागर का व्यक्तित्व खुलकर सामने आता है तो डॉ. यासमीन सुलताना नक़वी का लेख इलाचन्द्र जोशी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक सार्थक बहस शुरू करता है। कवि कौशल किशोर और चन्द्रेश्वर की नई किताबों पर समीक्षा के बहाने उमाशंकर सिंह परमार ने आज के तमाम सवालों पर अपनी बातें रखी हैं। कवि, पत्रकार डॉ. सुभाष राय के संग्रह 'सूली पर सच' की कविताओं पर डॉ. संतोष चतुर्वेदी ने अपनी बातें बड़ी साफगोई से रखी है। सृजन सरोकार ने प्रकाशित रचनाओं के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक सवालों पर सार्थक बहस के लिए मंच उपलब्ध कराने की कोशिश की है। हम आमंत्रित करते हैं लेखकों, कवियों को ऐसी रचनाओं के लिए जिनसे सही सोच विकसित हो सके। आज की विडम्बना है कि संघों और गुटों में बंटे लेखक, कवि उन रचनाकारों को अछूत मानते हैं जो उनकी वैचारिक परिधि में नहीं आते। इस पर उमाशंकर परमार ने भी अन्यत्र अपनी बात कही है। साहित्य के लिए यह अस्पृश्यता खतरनाक है। बेहतर है, नाइत्तफाकी पर बहस हो और आज को बेहतर बनाने की कोशिश तेज हो।

वरिष्ठ पत्रकार, लेखक और कवि राज किशोर का जाना इस वक्त की सबसे बड़ी क्षति है। राजकिशोर ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने परम्परागत पत्रकारिता को एक नई दिशा दी। राजकिशोर कोलकाता में पैदा हुए थे परन्तु उनका पैतृक घर उत्तर प्रदेश के मोहम्मदाबाद गोहना में था। वे बदलाव के पक्षधर थे और समाज में इस बदलाव के होते हुए देखना चाहते थे। गंभीर चिंतन के साथ खुलकर विचार रखने वाले पत्रकार थे राजकिशोर। सृजन सरोकार की ओर से राजकिशोर जी को विनम्र श्रद्धांजलि!

अमृतलाल नागर पर एक भाव-भीना संस्मरण

अमरित बतिया बिसरत नाहि

डॉ. दीप्ति गुप्ता

जन्म स्थान : उत्तर प्रदेश, मुरादाबाद
शिक्षा : आगरा विश्वविद्यालय से एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (संस्कृत), पी-एच.डी. (हिन्दी) 1978
पूर्व प्रोफेसर, रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली एवं पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।
प्रशासनिक अनुभव : राष्ट्रपति द्वारा, 1989 में 'मानव संसाधन विकास मंत्रालय', नई दिल्ली में 'शिक्षा सलाहकार' पद पर तीन वर्ष के डेप्युटेशन पर नियुक्ति (1989-1992)
अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन। 16 पुस्तकें प्रकाशित।

कुछ लोग हमारे जीवन पर अपनी सरलता और सादगी से ऐसी गहरी छाप छोड़ देते है कि उन्हें हम चाह कर भी भुला नहीं पाते। वैसे तो 'ऐसे खास' लोगों को भुलाना कौन चाहता है, लेकिन मुझ जैसा जो बहुत निकट हो, उसे जब-जब ऐसे ख़ास शख्स की याद आती है तो बहुत कष्ट की अनुभूति होती है। तब दिल चाहता है कि काश या तो वे मेरे सामने होते या फिर मैं उन्हें किसी तरह भूल पाती। लेकिन ऐसा हो नही पाता। जी हाँ, मैं बात कर रही हूँ हिन्दी साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर, कालजयी साहित्य के प्रणेता, जिंदादिल, उदार मानस, 'अमृतलाल नागर' जी की। जब भी मैं अतीत में उतरती हूँ तो मुझे उनके ठहाके, हँसता चेहरा, मुस्कुराती आँखें, पान की गिलौरी से भरा मुँह, 'प्रतिभा बा' के साथ चुहुल के लिए तैयार और जब गम्भीर हों, तो ज्ञान का निर्झर, तो कभी एकाएक बच्चों की तरह मासूमियत ओढ़ लेने वाले.....उनकी ये खूबियाँ सिलसिलेवार आँखों में लहरा उठती हैं।

यूँ तो मेरा उनसे दूर-दूर तक कोई नाता नहीं था, न खून का रिश्ता, न कोई खानदानी सूत्र मुझसे आकर जुड़ता था। लेकिन जब मैं शोधार्थी के रूप में उनके साहित्य पर, उनसे चर्चा करने के लिए मिली तो, यह बेहद औपचारिक और साहित्यिक चर्चा का बौद्धिक रिश्ता, न जाने कब और कैसे पिता और पुत्री के भावनात्मक रिश्ते में रूपान्तरित हो गया। वे मुझे अपनी मानस पुत्री मानने लगे और मैं, जो जीवन में पिता की असमय मृत्यु के कारण, सदा पिता के प्यार से वंचित रही, उनके इस प्यार और सम्मान से गदगद हुई, उन्हें 'बाबू जी' कहने लगी और तब से यह रिश्ता उत्तरोत्तर प्रगाढ़ होता हुआ, उनकी अंतिम साँस तक हूबहू कायम रहा।

उनसे मेरी पहली मुलाक़ात मेरे शोध कार्य के दौरान सन् १९७७ में हुई थी। आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी एम.ए. के बाद मैंने अपने निदेशक से चर्चा के उपरांत नागर जी के उपन्यास साहित्य पर शोध करने का निर्णय लिया और अविलम्ब उनके उपन्यास खरीद कर पढ़ने शुरू किए। उनके उपन्यास इतने हृदयग्राही थे कि शुरू करने के बाद बीच में छोड़ने का मन ही नहीं होता था। मेरी फुफेरी बहन जो उस समय आई.टी. कालिज, लखनऊ में फिजिक्स विभाग में प्रवक्ता थी और बहन